श्री हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला १२७

॥ श्रीः ॥

श्रीकोषः

(हिन्दी–संस्कृत कोष)

हे छात्र जन ! यदि चाहते अनुवादमें उत्तीर्णता,
श्रीकोषसे करिये तुरत व्युत्पत्तिकी, विस्तीर्णता ।
श्रीकोष वालोंसे यथा दारिद्र्य डरता है सदा,
'श्रीकोष' वालोंसे तथा अज्ञान भगता सर्वदा ॥

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी-१

विषय-सूची

वर्ग	पृष्ठ
स्वर्गवर्ग	१
दिग्वर्ग	६
कालवर्ग	८
भूमिवर्ग	१०
शैलवर्ग	११
जलवर्ग	११
पुरवर्ग	१३
गृहवर्ग	१३
गृहवस्तुवर्ग	१५
देशवर्ग	१६
आसनवर्ग	१७
जातवर्ग	१८
कर्मजसञ्ज्ञावर्ग	१९
कुलवर्ग	२१
देहवर्ग	२३
वस्त्रवर्ग	२६
आभूषणवर्ग	२७
धातुवर्ग	२८
रत्नवर्ग	२९
रङ्गवर्ग	२९
पात्रवर्ग	३०
अन्नवर्ग	३१
भोजनवर्ग	३१
मिठाईवर्ग	३३
तैलवर्ग	३३
मुरब्बा अचारवर्ग	३३
नशावर्ग	३४
ईंधनवर्ग	३४
रस (स्वाद) वर्ग	३४
शाकवर्ग	३४
मसाले आदिका वर्ग	३५
तरुवर्ग पेड़ोंके नाम	३४
पुष्पवर्ग	३७
फलवर्ग	३८
मेवावर्ग	३९
घास आदिवर्ग	३९
पशुवर्ग	३९
पक्षिवर्ग	४०
कीटवर्ग	४१
जलजन्तुवर्ग	४२
सर्पादिवर्ग	४३
रोगवर्ग	४३
चिकित्सावर्ग	४५
यानवर्ग	४५
खेती आदिके नामका वर्ग	४६
पाठ्यवस्तुवर्ग	४७
युद्धवर्ग	४८
मल्लयुद्धवर्ग	४९

वर्ग	पृष्ठ	वर्ग	पृष्ठ
वेदादिवर्ग	५०	विराम के चिह्न	६२
संस्कारवर्ग	५२	सर्वनामवर्ग	६३
नवीनप्रकीर्णशब्द	५२	अव्ययवर्ग	६४
प्रकीर्णशब्दवर्ग	५३	क्रियाविशेषणवर्ग	६५
धर्मवर्ग	५६	भाववाचकसञ्ज्ञावर्ग	६७
सम्प्रदायवर्ग	५६	विशेषणवर्ग	८५
वाद्यवर्ग	६०	क्रियावर्ग	९७
संख्यावर्ग	६१	कुछ नये शब्द	९८

साङ्केतिक अङ्कोंका स्पष्टीकरण

स्वर्गादि वर्गमें जो १, २ और ३ अङ्क आये हैं, उनका तथा क्रियावर्गमें जो १से१० तक अङ्क हैं, उनका तात्पर्यार्थ निम्नरीतिसे है—

१ = पुंल्लिङ्ग यथा—१ स्वर्गः = स्वर्ग शब्द पुंल्लिङ्ग है ।

२ = स्त्रीलिङ्ग यथा—२ लक्ष्मीः = लक्ष्मी शब्द स्त्रीलिंग है ।

३ = नपुंसकलिङ्ग यथा—३ शार्ङ्गम् = शार्ङ्गशब्द नपुंसकलिङ्ग है ।

इसी रीतिसे क्रियावर्गमें भी १से१० तकके अङ्कोंसे भ्वादिसे लेकर चुरादि तकका ज्ञान करना चाहिये । यथा १ से भ्वादि, २ से अदादि, ३ से जुहोत्यादि४ से दिवादि, ५ से स्वादि, ६ से तुदादि, ७ से रुधादि, ८ से तनादि, ९ से क्रयादि और १० से चुरादि ।